अमृत वाणी

लंबी जिंदगी का महत्व नहीं है, जितना महत्व इसकी गहनता का है।

-राल्फवाल्डो एमर्सन,

देशभर में लॉक आऊट

मंगलवार की मध्यरात्रि से देशभर में लॉक आऊट की घोषणा कर दी गई है। एक सप्ताह में दूसरी बार कोरोना को लेकर राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश वासियों के साथ कोरोना वायरस की भयावहता के बारे में अपने विचार साझा करते हुए यह घोषणा की। प्रधानमंत्री ने एक ओर जहां जनता कर्फ्यू में लोगों द्वारा प्रदर्शित एकजुटता की प्रशंसा की वहीं लॉक आऊट को कतिपय लोगों द्वारा गंभीरता से नहीं लिए जाने और बेवजह घर से बाहर निकलकर मौज मस्ती करने पर गंभीर चिन्ता व्यक्त की।

श्री मोदी ने कहा कि पश्चिमी देशों में आधुनिकतम चिकित्सा एवं अन्य तमाम सुविधाएं विद्यमान है। विशेषज्ञ भी इसकी दवा तलाशने में जुटे हैं परंतु फिर भी वे इस महामारी को नियंत्रित नहीं कर पा रहे हैं। ऐसे में इस वायरस की गंभीरता को समझना मुश्किल नहीं है। उन्होंने कहा कि यह सर्वविदित है कि इस वायरस के फैलने का कारण एक दूसरे से करीबी संपर्क ही है इसलिए इससे बचने का एकमात्र उपाय भी दूसरों के संपर्क से बचना है। उन्होंने देशभर में लॉक आऊट लागू करने का उद्देश्य यही बताया ताकि लोग घरों में रहें। किसी से नहीं मिलें।

आश्चर्य की बात है कि प्रतिदिन खबरों में कोरोना वायरस की भयावहता के बारे में सुनने और देखने के बावजूद कुछ लोग इसकी गंभीरता को नहीं समझकर इसको अत्यंत हल्के ढंग से ले रहे हैं। जो बात लोगों को स्वयं समझकर ऐहतियात बरतनी चाहिए उसे पुलिस के द्वारा उन्हें जबरदस्ती समझानी पड़ रही है लेकिन यह कहां तक संभव है। जब तक लोग ये नहीं समझेंगे कि ये सारे ऐहतियात और रोक टोक उनके स्वयं की सुरक्षा और जीवन रक्षा के लिए है वे तब तक उसे मन से नहीं अपना सकेंगे।

यह तो बहुत अच्छी बात है कि हमारे देश में केन्द्र सरकार और हमारी छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा समय पर उठाए गए प्रभावी कदम के कारण यह वायरस अब तक तीसरे चरण में नहीं पहुंच पाया है लेकिन अगर लोगों की इसी तरह जबरन घर से निकलने, एक दूसरे से मिलने मिलाने तथा अन्य सुरक्षात्मक उपाय नहीं अपनाने जैसी लापरवाही बनी रही तो अधिक दिनों तक इस वायरस पर नियंत्रण रख पाना मुमकिन नहीं हो पाएगा और एकबार अगर यह तीसरे चरण में पहुंच गया तो इसके विकराल महामारी स्वरूप को संभालना लगभग असंभव हो जाएगा।

दरअसल सरकार चाहे जितनी भी कोशिश क्यों न करे जबतक आम लोगों की उसमें पूर्ण सहभागिता नहीं होगी तब तक उन प्रयासों का पूर्णतया सफल होना संभव नहीं है।

इसलिए अभी भी समय है। हम सब अगर पूरी गंभीरता से इस वैश्विक महामारी की भयावहता को समझे और एकजुटता के साथ संकल्पबद्ध होकर इसका सामना करने घरों में रहकर सारे ऐहतियात बरतें तो निश्चय ही हम स्वयं, अपने परिवार और देश को इस संकट से उबारने में सहायक हो सकेंगे।

राज-काज

लॉकडाउन की जटिलताएं

कोरोना वायरस के बढ़ते संक्रमण को देखते हुए लगभग पूरे देश को ही लॉकडाउन की स्थिति में लाना पड़ गया है। इस महामारी से लडऩे का यही सबसे मुफीद तरीका है। लेकिन एक आम भारतीय के लिए यह एक अप्रत्याशित स्थिति है, इसलिए वह अपने को इन हालात के लिए तैयार नहीं कर पा रहा है। इससे कई तरह की जटिलताएं पैदा हो गई हैं। दरअसल देश भर में फैक्ट्रियां, दफ्तर, स्कूल-कॉलेज और कोचिंग इंस्टीट्यूट बंद होने के बाद उनके सामने स्वाभाविक रास्ता यही था कि वे अपने गांवों-कस्बों की ओर लौट जाएं। यह यथार्थ अक्सर हमारी समझ से परे चला जाता है कि भारत अभी आंतरिक विस्थापितों का देश है, जहां लोग रोजी-रोटी और शिक्षा के लिए अपना घर छोड़कर दूर के शहरों में जाते हैं। किसी भी संकट की स्थिति में उनकी स्वाभाविक प्रतिक्रिया अपने मूल स्थान लौटने की होती है। इस बात को समझे बगैर कई फैसले किए गए।

कामगारों का क्या

कोरोना के चलते कारखाने और कई सेवाएं बंद कर दी गई लेकिन यह नहीं सोचा गया कि कामगारों का क्या होगा। संभवत: यह फैसला बिना होमवर्क के किया गया। बहरहाल, इन फैसलों में कोई भी ऐसा नहीं है जिसे बदला न जा सके। किसी भी हाल में आवाजाही रोकने की जरूरत है। जो जहां है, उसे वहीं रोका जाए, जो तभी संभव है, जब लोगों के भरण-पोषण पर कोई आंच न आए। इसके लिए मजदूरों को आश्वस्त करना होगा कि बिना काम किए भी उनकी रोजी-रोटी चलती रहेगी। उन्हें राशन और अन्य जरूरी वस्तुएं उपलब्ध करानी होंगी।

सबकी सुख समृद्धि के लिए होता है नवसंवत्सर

जो सभ्यता अपने इतिहास पर गर्व करती है, अपनी संस्कृति को सहेज कर रखती है और अपनी परंपराओं का श्रद्धा से पालन करके पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाती है वो गुजरते वक्त के साथ बिखरती नहीं बल्कि और ज्यादा निखरती जाती है।

जब चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा के सूर्योदय के साथ सम्पूर्ण भारत के घर घर में लोग अपने इष्टदेवी देवता का अपनी अपनी परंपरा अनुसार पूजन करके नवसंवत्सर का स्वागत कर रहे होते हैं, तो विश्व इस सनातन संस्कृति की ओर कौतूहल से देख रहा होता है। क्योंकि कश्मीर से कन्याकुमारी और गुजरात से पूर्वोत्तर तक लोग इस दिन को उगादि, नवरेह, नवरात्र, गुड़ी पड़वा, जैसे त्योहारों के रूप में मना रहे होते हैं, पावन नदियों की पूजा कर रहे होते हैं, मंदिरों में मंत्रोच्चार के साथ शंखनाद और घंटनाद चल रहा होता है, तो यह पूजन अपने लिए नहीं होता। क्योंकि अपने लिए जब मनुष्य पूजा करता है तो अकेले कर लेता है कभी भी कर लेता है कहीं भी कर लेता है, कैसे भी कर लेता है। कभी करता है, कभी नहीं भी करता। लेकिन चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की पहली तिथि को वो केवल जीवन जीता ही नहीं है, वो इस दिन को मनाता भी है। इस दिन वो कृतज्ञता प्रकट करता है उस प्रकृति के प्रति जिसने उसके खेतों को फसलों से भर दिया वो आभार व्यक्त करता है उन फसलों का जो उसकी खुशहाली का प्रतीक हैं वो शुक्रिया अदा करता है उस सृष्टि का जिसने उसे इतना कुछ दिया, और वो नतमस्तक होता है उस परम पिता परमेश्वर के आगे जो इस सृष्टि का पालनहार है। और इसलिए यह पूजन उसके खुद के लिए न होकर सम्पूर्ण सृष्टि के लिए होता है, प्रकृति के लिए होता है, मानव समाज के लिए होता है, पशुओं के लिए होता, पक्षियों के लिए होता है, फल देने वाले पेड़ों के लिए होता है, फसलों पौधों के लिए होता, सबकी सुख समृद्धि के लिए होता है। और चूंकि अच्छी फसल पर केवल वो किसान ही नहीं निर्भर होता जिसने खेतों में साल भर मेहनत की होती है बल्कि हम सभी निर्भर होते हैं। इस लिए यह दिन एक त्यौहार बन जाता है जिसमें मनुष्य बीते हुए साल के लिए कृतज्ञता प्रकट करता है तो आने वाले साल के लिए आशीर्वाद की मंगलकामना करता है।

अपने इष्टदेव के समक्ष दीप प्रज्वलन के साथ ही मानते हैं। तारीखें देखने के लिए भले ही अंग्रेजी कैलेंडर लाते हों लेकिन तिथियों तो पंचांग में ही देखते हैं। जन्म से लेकर मृत्यु, गृह प्रवेश से लेकर भूमिपूजन, मुंडन से लेकर विवाह तक शुभ मुहूर्त तो विक्रम संवत से ही निकालते हैं।

सालों से चलने वाली यह परंपरा हर भारतीय घर की संस्कृति का हिस्सा है। शायद इसलिए पूरी दुनिया के साथ मौज मस्ती करते हुए झूमते नाचते हुए हम भारतीय भी भले ही पहली जनवरी को न्यू ईयर पार्टी में जाते हों, लेकिन नववर्ष तो

उज्जैन के राजा विक्रमादित्य द्वारा ईसाई युग से 57 साल पहले विक्रम संवत शुरू किया गया था जिसकी वैज्ञानिकता के आगे आज भी आधुनिक विज्ञान बहुत बौना साबित होता है। दरअसल जब पश्चिमी सभ्यता में गैलेलियो को उनकी खोजों के लिए सज़ा दी जा रही थी तब भारत ब्रह्मांड के रहस्य दुनिया के सामने खोलते जा रहा था। जब पश्चिमी सभ्यता में एक हज़ार से ऊपर की गणना का ज्ञान नहीं था, तब भारत को गणित की विराटतम संख्या तल्लाक्षण का भी ज्ञान था। तल्लाक्षण अर्थात एक के आगे त्रेपन शून्य से निर्मित संख्या। ग्लोबल विस्तारण् नामक ग्रंथ में तल्लाक्षण की व्याख्या करते हुए कहा गया है सौ करोड़ यानी एक अयुत,सौ अयुत यानी एक नियुत, सौ नियुत यानी एक कंकर,सौ कंकर यानी एक सर्वज्ञ,सौ सर्वज्ञ यानी एक विभूतंगमा और सौ विभूतंगमा का मान एक तल्लाक्षण के बराबर होता है। शून्य की खोज हो चाहे नक्षत्रों की खोज, गणित का क्षेत्र हो या खगोल का, आध्यात्म का ज्ञान हो या ज्योतिष, भारतीय दर्शनशास्त्र हो या अर्थशास्त्र इसकी वैज्ञानिकता आज भी अचंभित करने वाली है। इस बात का प्रमाण भारतीय कालगणना है जिसे आज अकाट्य मानकर नासा में इस पर खोज हो रही है। और इसी कालगणना के आधार पर जब हिन्दू नववर्ष का आगमन होता है तो इसकी वैज्ञानिकता का प्रमाण इससे अधिक क्या हो सकता है कि केवल मानव मात्र इसे एक उत्सव के रूप में नहीं मनाता अपितु प्रकृति भी इस खगोलीय घटना के स्वागत को आतुर दिखाई देती है। महीनों से खामोश कोयल कूकने लगती है, पक्षी चहचहाने लगते हैं, पेड़ नए पत्तों से सज जाते हैं, बगीचे रंग बिरंगे फूलों से खिलखिला उठते हैं, पूरी धरती लाल, पीली, हरी चुनरी ओढ़कर इठला रही होती है, और सर्द मौसम वसंत की अंगड़ाई ले रहा होता है। क्या पौधे क्या जानवर सभी एक नई ऊर्जा एक नई शक्ति का अनुभव कर रहे होते हैं। ऐसे में शक्ति की उपासना के साथ नवसंवत्सर के स्वागत से बेहतर और क्या हो सकता है। यही सनातन संस्कृति और परंपराएं हमारी पहचान हैं। महात्मा गांधी ने भी कहा है कि स्वराज का अर्थ है, स्वसंस्कृति, स्वधर्म एवं स्वपरम्पराओं का हृदय से निर्वाह करना।

डॉ. नीलम महेंद्र
(वे लेखक के अपने विचार हैं)

जीवन बचाने के लिए 21 दिन का लॉकडाउन

प्र धानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक बार फिर देशवासियों का आह्वान किया है कि वे कोरोना की महामारी का मुकाबला करने के लिए सरकार के साथ कदम से कदम मिलाकर चलें। उन्होंने कहा आज रात 12 बजे से पूरे देश में लॉकडाउन होगा। यह फैसला जनता कर्फ्यू से भी बड़ा है। सब लोग अपने घरों में ही रहें। यह लॉकडाउन तीन सप्ताह का होगा। इसका मतलब हर नागरिक का जीवन बचाना है। 21 दिन नहीं सम्भले तो 21 साल इंतज़ार करना पड़ सकता है। कोरोना से बचने का यही एक उपाय है। अपने घरों में रह कर हम इसका मुकाबला कर सकेंगे। मोदी ने कहा हम सब की एकजुटता और जागरूकता ही हमें बचाव का रास्ता दिखाएगी। प्रधानमंत्री ने राष्ट्र के नाम अपने दूसरे सम्बोधन में कहा की जनता कर्फ्यू को बच्चे से बुजुर्ग तक ने एकजुट होकर उसे सफल बनाया वह काबिले तारीफ था। उन्होंने कहा अभी हमें यहीं नहीं रुकना है अपितु कोरोना को देश से भागने के लिए संघर्ष और साहस से आगे बढ़ना है। लड़ाई लम्बी जरूर है मगर सफलता निश्चित है।

देशवासियों ने दिखा दिया जब मानवता पर संकट आता है तब सब मिलकर उसका मुकाबला करते है। कोरोना की चुनौतियां अभी बढ़ती ही जा रही है। इस वैश्विक महामारी का मुकाबला सोशल डिस्टेंसिंग से कर सकते है। कोरोना से बचने का यही एक मात्रा रास्ता है। कुछ लोग अभी भी इसे गंभीरता से नहीं ले रहे है। लापरवाही सही नहीं है। राज्य सरकारों ने लोक डाउन किया है जिसका समर्थन सब को करना चाहिए। प्रधान मंत्री ने कहा चीन अमेरिका और इटली जैसे देश आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाओं से परिपूर्ण होने के बाद भी कोरोना का सफलतापूर्वक मुकाबला नहीं कर पाए। हमें इससे सबक लेते हुए कोरोना की महामारी मुकाबला करना है। अपने घरों पर रह कर सुरक्षा ए अनुशासन और सयम परिचय देना है। हमें स्वास्थ्य कर्मियों के सहस और मनोबल का आभार व्यक्त कर उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए जो संकटों में फंस कर हम सब के लिए डयूटी दे रहे है। सभी आवश्यक चीजें सुलभ हो इसकी व्यवस्था कर रहे है। जीवन बचाने के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी। अफ्वाहों से भी बचे। इससे पूर्व वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि कोरोना वायरस लॉकडाउन के मद्देनजर विभिन्न क्षेत्रों की मदद के लिये सरकार जल्द ही आर्थिक पैकेज की घोषणा करेगी। उन्होंने कहा कि देरी नहीं होगीए पैकेज की घोषणा जल्द ही की जाएगी। वित्त मंत्री ने इनकम टैक्स और जीएसटी को लेकर अहम राहतों का ऐलान किया। उन्होंने कहा कि वित्तवर्ष 2018.19 की आईटीआर की डेडलाइन 30 जून तक बढ़ा दी गई है। ब्याज 18 फीसदी से घटाकर 9 फीसदी कर दिया गया है। इसके अलावा अलावा वस्तु एवं सेवा कर की मार्च, अप्रैल तथा मई 2020 की रिटर्न दाखिल करने की अंतिम तिथि को भी बढ़ाकर 30 जून कर दिया गया है। कोरोना वायरस के मरीजों की संख्या में इजाफा होते जा रहा है। देश में कोरोना वायरस के मरीजों की संख्या 536 हो गई है जबकि मौतों की संख्या 10 तक पहुँच गयी है।

बाल मुकुंद ओझा
(वे लेखक के अपने विचार हैं)

नौ दिनों का उत्सव है नवरात्रि

न वरात्रि पर्व भारत में होली-दीपावली और दशहरे जैसी धूमधाम, हर्षोल्लास और श्रद्धा से मनाया जाता है। इस वर्ष चैत्र नवरात्र 25 मार्च से लेकर 2 अप्रैल तक रहेंगे। एक वर्ष में चार नवरात्रियां आती हैं। नवरात्रि के नौ दिन मां दुर्गा के अलग-अलग रूपों की पूजा होती है। मंत्रोच्चारण से लेकर पूजा-पाठ, भोग लगाने तक हर एक चीज का अपना एक खास महत्व होता है। भागवत पुराण के अनुसार साल में चार नवरात्र मनाए जाते हैं। दो गुप्त नवरात्र शारदीय नवरात्र और बासंती नवरात्र चैत्र नवरात्र के नाम से भी जाना जाता है। चारों नवरात्रि ऋतु चक्रों पर आधारित हैं। चैत्र नवरात्र के साथ हिन्दू नव वर्ष की शुरुआत होती है।

हिंदू धर्म में नवरात्रि का बहुत महत्व है। नवरात्रि शब्द एक संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ होता है नौ रातें। इन नौ रातों और दस दिनों के दौरान देवी के नौ रूपों की पूजा की जाती है। दसवाँ दिन दशहरा के नाम से प्रसिद्ध है। नवरात्रि देश का एक बहुत महत्वपूर्ण प्रमुख त्योहार है जिसे पूरे भारत में श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जाता है। नवरात्रि भारत के विभिन्न प्रदेशों में अलग ढंग से मनायी जाती है। गुजरात में नवरात्रि समारोह डांडिया और गरबा के रूप में धूमधाम से मनाया जाता है। यह पूरी रात भर चलता है। देवी के सम्मान में भक्ति प्रदर्शन के रूप में गरबा, आरती से पहले किया जाता है और डांडिया समारोह उसके बाद। पश्चिम बंगाल में यह पर्व पूरे उत्साह और श्रद्धा के साथ आयोजित किया जाता है। 25 मार्च से चैत्र के महीने का आगाज हो रहा है। इस पावन माह में माता रानी की पूजा अर्चना की जाती है। नवरात्र में देवी और नवग्रहों की पूजा का कारण यह भी है ग्रहों की पूरे वर्ष अनुकूल रहे और जीवन में खुशहाली बनी रहे।

कोरोना कोहराम से लोगों में धार्मिक आस्था कम नहीं हो रही है। देशवासी नवरात्र मनाने की तैयारियां कर रहे है। चैत्र माह में आने वाले नवरात्र को चैत्र नवरात्र कहा जाता है। इस दौरान मां दुर्गा के नवरूपों की उपासना की जाती है। इसमें शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री की पूजा अलग-अलग दिन होती है।

नवरात्र के पहले दिन देवी को शरीर में लेप के तौर पर लगाने के लिए चंदन और केश धोने के लिए त्रिफला चढ़ाना चाहिए। त्रिफला में आंवला, हर्रड़ और बहेड़ा डाला जाता है। दूसरे दिन केशों को ठीक स्थान पर रखने के लिए माता को रेशम की पट्टी दी जाती है। तीसरे दिन पैरों को रंगने के लिए आलता, सिर के लिए सिंदूर और देखने के लिए दर्पण दिया जाता है। चौथे दिन देवी को शहद, मस्तक पर तिलक लगाने के लिए चांदी का एक टुकड़ा और आंख में लगाने का अंजन, यानि कि काजल दिया जाता है। नवरात्र के पांचवें दिन देवी मां को अंगराग, यानि सौन्दर्य प्रसाधन की चीजें और अपने सामर्थ्य अनुसार आभूषण चढ़ाने का विधान है। नवरात्र के छठे दिन मां कात्यायनी की उपासना की जायेगी और बेल के पेड़ के पास जाकर देवी का बोधन किया जायेगा। इस बारे में हम नवरात्र के छठे दिन बताएंगे। नवरात्र के सातवें दिन मंत्रोच्चारण के साथ बेल के पेड़ से लकड़ी तोड़कर लाई जाती है।

मातृ शक्ति के रूप में देवी जी की पूजा उपासना की भिन्न-भिन्न पद्धतियां विभिन्न रूपों में भारत में प्रचलित हैं। उनकी उपासना का सर्वश्रेष्ठ रूप सभी जगह नवरात्रियों के अवसर पर देखने को मिलता है। चैत्र नवरात्र से गर्मी शुरू हो जाता है। ये ठंड और गर्मी का संधिकाल है। इस समय में मौसमी बीमारियां होने की संभावनाएं काफी अधिक रहती हैं। इसी वजह से नवरात्रि में व्रत रखने की परंपरा है, ताकि खानपान में लापरवाही न हो। इन दिनों में फलाहार लेने का महत्व है।

फलों के रस का सेवन किया जाता है। ये हमारे शरीर के लाभदायक होते हैं। चौत्र नवरात्र को स्वास्थ्य नवरात्रि के नाम भी जाना जाता है। कुछ लोग इन दिनों में नीम की पत्तियों का सेवन भी करते हैं। देवी मां की पूजा का महापर्व है चैत्र नवरात्र। इन दिनों में देवी पूजा के साथ ही दान-पुण्य भी करना चाहिए। जरूरतमंद लोगों को भोजन और धन का दान करें। नवरात्रि में व्रत करने वाले लोगों को फल जैसे केले, आम, पपीता आदि का दान करें।

बाल मुकुन्द ओझा

सोशल मीडिया पर कोरोना को लेकर न फैलाएं अफवाहें

ती न महीने पहले चीन के वुहान शहर से हुआ कोरोना का कहर देखते ही देखते दुनिया के लगभग सभी देशों तक पहुंच गया है। कोरोना से संक्रमित लोगों की संख्या दुनियाभर में चार लाख तक पहुंच गई है और 17 हजार से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। इटली में तो कोरोना के कारण चीन से भी ज्यादा मौतें हो चुकी हैं। कोरोना को लेकर कई देशों में लॉकडाउन की स्थिति है। अर्जेन्टीना में भी 20 मार्च को लॉकडाउन घोषित कर दिया गया है। भारत में भी कोरोना संक्रमितों का आंकड़ा लगातार बढ़ रहा है। जिसे देखते हुए 24 मार्च को रात 12 बजे से पूरे देश में लॉकडाउन कर दिया गया है। हालांकि जनता कर्फ्यू की सफलता देखते हुए कई राज्यों में 22 मार्च को ही लॉकडाउन या कर्फ्यू लागू कर दिया गया था लेकिन अब भारत में कोरोना के मंडराते खतरे के मद्देनजर देशभर में लॉकडाउन कर दिया गया है। देश में अभी तक कोरोना के करीब साढ़े पांच सौ मामले सामने आ चुके हैं और कोरोना का खतरा निरन्तर गहरा रहा है। खतरे का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि दो सप्ताह में ही देश में कोरोना संक्रमितों की संख्या दस गुना से ज्यादा हो गई। यही कारण है कि केन्द्र सरकार सहित तमाम राज्य सरकारें इसे द्वितीय चरण से तीसरे चरण में पहुंचने से रोकने के लिए कमर कस रही हैं।

आमतौर पर जब भी कोई प्राकृतिक संकट आता है तो कुछ देशों अथवा राज्यों तक ही सीमित रहता है लेकिन इस बार का संकट ऐसा हैए जिसने विश्वभर की पूरी मानव जाति को संकट में डाल दिया है। इसलिए देश के प्रत्येक नागरिक को अब अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए कि कोरोना के आसन्न खतरे को हल्के में लेना देश के लिए बेहद खतरनाक हो सकता है। दरअसल अभी तक विज्ञान कोरोना महामारी से बचने के लिए कोई निश्चित उपाय नहीं सुझा सका है और न ही इसकी कोई वैक्सीन बन पाई है। ऐसी स्थिति में भारत में कोरोना के गहराते खतरे को देखते हुए हर किसी की चिंता बढ़ना स्वाभाविक है क्योंकि भारत जैसे सवा अरब से भी अधिक आबादी वाले विकास के लिए प्रयत्नशील देश पर कोरोना का संकट कोई सामान्य बात नहीं है। कोरोना के इसी आसन्न खतरे को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक सप्ताह में दो बार राष्ट्र के नाम अपने संदेश में देशवासियों से बचाव के लिए संयम का संकल्प लेने का आव्हान किया और घरों से बाहर नहीं निकलने की अपील की है।

एक ओर जहां कोरोना का खतरा गहरा रहा है वहीं सोशल मीडिया के जरिये कोरोना को लेकर बहुत सारी अफवाहें भी फैलाई जा रही हैं। कोरोना को लेकर मजाक बनाया जा रहा है। आज की परिस्थितियों को देखते यह सब ठीक नहीं है। सोशल मीडिया के इस तरह के दुरूपयोग पर लगाम लगाए जाने की जरूरत है। दुनियाभर के विशेषज्ञ एक स्वर में कह रहे हैं कि कोरोना की अब तक कोई वैक्सीन नहीं बनी है और न ही इसका कोई इलाज हैए वहीं सोशल मीडिया के प्लेटफार्म लोग कोरोना को लेकर बेतुका ज्ञान बांट रहे हैं। कोई करेले का जूस पीने से कोरोना वायरस महज दो घंटे में लुप्त हो जाने का दावा करते हुए इस संदेश को तेजी से वायरल करने को कह कर रहा है तो कोई गौमूत्र के सेवन से कोरोना से बचने की सलाह दे रहा है। इसी प्रकार कुछ लोग लहसुनए प्याजए गर्म पानीए विटामिन सीए स्टेरॉयडए शराब इत्यादि के जरिये कोरोना को भगाने की उलजुलूल सलाह दे रहे हैं। नोबेल कोरोना ध्वसन संबंधी रोग है और कोरोना वायरस को 75 प्रतिशत अल्कोहल छिड़कने तथा उससे साफ करने से ही मारा जा सकता हैए शराब पीकर नहीं। आज के समय में सोशल मीडिया पर फैलती अफ्वाहों पर तत्काल प्रभाव से अंकुश लगाए जाने की सख्त जरूरत है। कई बार गलत सूचनाओं के कारण समाज में दहशत का माहौल भी बन जाता है। प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि देश को कोरोना के बड़े खतरे से बचाने के लिए ऐसी अफ्वाहों से बचते हुए केवल सरकार तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा जारी दिशा.निर्देशों का ही पालन किया जाए। अच्छा होगा अगर कोरोना को लेकर बेतुके ज्ञान बांटने के बजाय सोशल मीडिया प्लेटफार्म का लोगों को जागरूक करने के लिए बेहतर उपयोग किया जाए। कोरोना को लेकर बहुत सारे लोगों के मन में अभी भी यह भय व्याप्त है कि कोरोना का संक्रमण होने के पश्चात् मौत निश्चित है लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है। अभी तक के आंकड़े देखें तो कोरोना संक्रमण के बाद भी दुनियाभर में हजारों मरीज ठीक हो चुके हैं। हाल ही में एम्स द्वारा मरीजों के लिए जारी जागरूकता दिशा.निर्देश पुस्तिका में स्पष्ट किया गया है कि कोरोना संक्रमित केवल 20 फीसदी मरीजों को ही अस्पताल में भर्ती करने की आवश्यकता पड़ती हैए जिनमें से कुछ को गहन चिकित्सा निगरानी कक्ष में रखना पड़ता है जबकि 80 फीसदी मरीज घर में आइसोलेशन में रहकर खुद ही ठीक हो जाते हैं। एम्स द्वारा जारी इस पुस्तिका में बताया गया है कि लोगों को कोरोना को लेकर घबराने की नहीं बल्कि सतर्क रहने और भीड़.भाड़ से बचने तथा सरकार द्वारा जारी दिशा.निर्देशों को अपनाने की जरूरत है। एम्स विशेषज्ञों के मुताबिक जिन मरीजों को उच्च रक्तचाप़ डायबिटीजए कैंसर जैसे रोग हैंए उन्हें कोरोना का खतरा ज्यादा रहता है। ऐसे मरीज भीड़.भाड़ से बचें और बार.बार हाथ धोते रहें। एम्स की जागरूकता दिशा.निर्देश पुस्तिका के अनुसार कोरोना वायरस पर्ष अथवा जमीन पर कितने समय तक रहता हैए इसका कोई निश्चित आंकड़ा नहीं है लेकिन कुछ अध्ययनों के अनुसार पर्ष पर यह वायरस कुछ घंटों से लेकर कई दिनों तक जीवित रह सकता हैए जो तापमान तथा परिस्थितियों और पर्ष की प्रकृति पर निर्भर करता है। पुस्तिका के मुताबिक अगर पर्ष संक्रमित है तो पर्ष को संक्रमण रोधी तरल पदार्थ से साफसुथरा रखें और सर्दी जुकामए छींक या बुखार से पीड़ित व्यक्तियों से कम से कम एक मीटर की दूरी बनाकर रहें। कोरोना से बचाव का सबसे बेहतर उपाय यही है कि साफसफाई पर विशेष ध्यान दें और भीड़भाड़ वाली जगहों के साथ.साथ अफ्वाहों से भी व्यापक दूरी बनाएं।

योगेश कुमार गोयल
(वे लेखक के अपने विचार हैं)